सुनहरा सूरज

रश्मि शर्मा*

आज सुधा बहुत खुश थी इतनी खुश कि ऑफिस के काम के बोझ से हुई थकान भी उसे महसूस नहीं हो रही थी। चार्टर्ड बस का एक घंटे का सफर कब बीत गया, उसे पता ही नहीं चला। आप सोचोगे क्यों? जी हाँ मैं बताती हूँ! आपको आज सुधा को एक साथ दो खुशियां जो मिली थीं; आज उसे लंबे इंतजार के बाद प्रमोशन लेटर मिला था और दूसरी यह कि उसका प्यारा बेटा जो एक आर्मी ऑफिसर है, दो साल के बाद तीन महीने की छुट्टी पाकर घर लौटने वाला था। सुधा को अपने बेटे शेखर का ईमेल आया था- ''मां मेरी लीव सैंक्शन हो गई है, मैं जल्द ही आपको फ्लाइट की तारीख और टाइम तय होते ही खबर करुंगा।'' एक लंबे अरसे बाद परिवार में आने वाली बहार का सुखद अनुभव उसकी चेहरे की मुस्कान का कारण बन रहा था। आज उसे सर्दी की शाम की ठंडी हवाओं में भी संगीत सुनाई दे रहा था।

हाथ पैरों पर नारियल का तेल लगाती सुधा की सासू मां लगभग चीख उठी जब सुधा ने अचानक पीछे से आकर उन्हें बाहों में जकड़ लिया ''मां आज का दिन बहुत शुभ है। आज ही मुझे प्रमोशन लेटर मिला और आज ही आपके पोते के आने का समाचार भी।'' सुनकर बूढ़ी आंखें में चमक आ गई और वह दोनों हाथ जोड़कर ईश्वर का धन्यवाद करने लगी। शोर सुनकर प्रकाश यानि सुधा के पति, स्टडी से बाहर आए और खुशखबरी सुनकर मुस्कुरा दिए, शायद इससे ज्यादा खुशी का इजहार करना उनके स्वभाव में था भी नहीं।

सुधा की लाई मिठाई का मां ने भोग लगाया और घर आरती की मधुर ध्वनि से गुंजायमान हो गया। कुछ ही देर में सर्दियों की शाम ने कुहासे की चादर ओढ़ ली और शाम रात के आगोश में जाने को तैयार थी। सुधा जब डिनर के बाद अपना किचन समेट रही थी तभी उसे घर के पिछवाड़े से किसी लड़की के चीखने और रोने की आवाज सुनाई दी जिसे सुनकर सुधा एकदम घबरा गई। आवाज सिर्फ एक लड़की की ही थी उसने तुरंत प्रकाश को बुलाया और आवाज सुनाई ''क्या सुधा तुम भी, होगा कोई कारण जो वो रो रही है तुम अपने काम से मतलब रखो'' संवेदनहीन पति से उसे इससे अधिक उम्मीद थी भी नहीं। खैर बात आई गई हो गई।

2 साल बाद जम्मू कश्मीर से लौट रहे अपने आर्मी ऑफिसर बेटे की घर में उपस्थिति की कल्पना से सुधा बहुत खुश थी। वह रविवार को आने वाला था और आज शुक्रवार हो गया था किंतु यह क्या? आज फिर उसी समय पर उसी लड़की के क्रंदन ने सुधा का दिल झकझोर कर रख दिया और कारण जानने की उत्सुकता ने उसे आतुर कर दिया। इतने में डोरबेल बजी, घर में सभी की नजर दरवाजे पर पड़ी सभी हैरान थे ''इस समय कौन हो सकता है'' ''हाय शेखर'' सुधा खुशी से चीख पड़ी सामने शेखर खड़ा था जिसने एक रात पहले पहुंच कर उन तीनों को चौंका दिया था। घर में खुशी की लहर दौड़ गई और सुधा, प्रकाश और दादी तीनों शेखर के लाड उतारने में लग गए। खाते पीते, बतियाते सबने सोने में आधी रात कर दी। रात ढली, सुबह हुई सुधा

* सेवानिवृत्त अधिकारी
भारत मानक ब्यूरो, नई दिल्ली।

अपनी व्यस्त दिनचर्या में मग्न हो गई। एक सप्ताह की छुट्टी बिताने के बाद आज सुधा को ऑफिस ज्वाइन करना था। प्रकाश ने सुधा को गाड़ी में चार्टर्ड बस स्टैंड पर छोड़ा और सुधा रोज की तरह बस में सवार हो ऑफिस के लिए निकल पड़ी। अभी बस स्टार्ट ही हुई थी कि परफ्यूम की खुशबू ने सुधा को साथ बैठी सवारी की ओर आकर्षित किया। सुधा ने नजर उठाई तो वह दंग रह गई।

इतनी खूबसूरती... शायद सुधा ने पहले कभी नहीं देखी थी। गुलाबी रंग, काली गोल आंखे, लंबे बाल और गठीला बदन, उम्र लगभग 25 साल रही होगी। देखते ही सुधा का मन चाहा वह उससे बात करे। ''आपको पहले इस बस में कभी नहीं देखा'' सुधा ने चुप्पी तोड़ी ''जी! मैं आज पहली बार ही आई हूँ'' फिर कुछ औपचारिक बातों में सफर कब कट गया पता ही नहीं चला।

सुधा और निवेदिता, जी हाँ यही नाम था उस आकर्षक व्यक्तित्व का जिससे सुधा प्रभावित थी, अब लगभग रोज मिलते और दोनों में धीरे-धीरे औपचारिकता खत्म होने लगी और वे अच्छी दोस्त बन गईं। निवेदिता ने बताया उसके घर में उसके अलावा उसकी एक छोटी बहन है पीहू जो हॉस्टल में रह कर पढ़ रही है और उसके पापा, जो रेलवे में कांट्रेक्टर है। मां कुछ साल पहले केदारनाथ में आए बर्फीले तूफान में हादसे का शिकार हो गई थी। मां का अपना एक संगीत विद्यालय था जो उनकी मृत्यु के बाद बंद करना पड़ा था। उसने यह भी बताया कि माता-पिता की प्रकृति और स्वभाव पूरी तरह विपरीत होने के कारण उनकी कभी बनी नहीं। अप्रिय माहौल में रहकर किसी तरह अपनी शिक्षा पूरी कर निवेदिता अपने पैरों पर खड़ी हुई थी। ''आप कभी घर आइए, पापा तो रात में आते हैं, मैं छुट्टी के दिन भी अकेली ही रहती हूं'' बेहद संजीदा और ठहरे स्वभाव की निवेदिता सुधा को बहुत भाती थी लेकिन यह क्या हुआ? निवेदिता ने जो अपने घर का नंबर बताया तो तो वही घर था जहाँ से रात को किसी लड़की के चीखने और रोने की आवाज आती है। इतने में सुधा का ऑफिस आ गया और वो बस से उतर गई। विचलित मन और गहरी सोच में डूबी सुधा ऑफिस तो पहुंच गई मगर उसका मन काम में बिल्कुल नहीं लगा।

सुधा ने निर्णय लिया कि वह निवेदिता से बात करके अपना संशय जरूर दूर करेगी। रात बेचैनी में बीती सुबह हुई और रोज की तरह उन दोनों की मुलाकात भी हुई। सुधा ने अपनी बात रखी, निवेदिता ने उसका जवाब भी पूरी ईमानदारी से दिया। अरे! लेकिन यह क्या? जवाब सुनकर सुधा के पैरों तले जमीन खिसक गई। सुधा को निवेदिता ने बताया कि खुद उसके पापा ही उसकी मां की मौत के बाद कई बार उसका यौन शोषण कर चुके हैं। रात के समय सुधा को सुनाई देने वाली आवाजें उसी अनर्थ का प्रमाण थी। ''तुमने उनकी पुलिस में कंप्लेंट क्यों नहीं की?'' निवेदिता ने बताया इसका कारण पीहू है जब उसे पता चलेगा कि उसके पिता जो उसके लिए केवल अनुराग की मूर्ति हैं, वे वास्तव में इतने गिरे हुए इंसान हैं तो उसके मासूम दिल पर क्या बीतेगी? वैसे निवेदिता ने बताया कि उसने अपने तरीके से हालात पर काबू पा रखा है। हतप्रभ सुधा ऑफिस पहुंची और दुखी मन को समझाने में लग गई।

कुछ ही दिन बीते थे जब एक दिन सुधा को ऑफिस से आने में देर हो गई। सर्दियों की शाम और ऊपर से बरसात, ठंड में ठिठुरती सुधा तेज रफ्तार से घर के गेट पर पहुंची तो घर के बाहर तक हंसी की आवाज सुनाई दे रही थी। अंदर पहुंची तो देखा अंदर निवेदिता, शेखर और मां हंस रहे थे। सामने टेबल पर चाय के तीन कप और कुछ स्नैक्स रखे थे। सुधा को देख निवेदिता एकदम खड़ी हो गई। मां ने कहा ''तुम्हारी फ्रेंड तो बहुत दिलचस्प है कब से तुम्हारा इंतजार कर रही है।'' मेरी छोटी बहन ने अपने स्कूल में टॉप किया है इसी खुशी में मैं आप लोगों के लिए मिठाई लाई थी। सुधा ने मिठाई का डिब्बा पकड़ा और वह भी सबके साथ गपशप में लग गई। असल में सुधा की तरह मां का दिल भी निवेदिता ने पहली मुलाकात में ही जीत लिया था। वह उन्हें अपने जमाने के तौर तरीके और माहौल की बातें सुनाकर हंसा रही थी लेकिन तभी जोर-जोर से एंबुलेंस के सायरन की आवाज

ने सबको चौंका दिया और तभी निवेदिता का फोन भी बजा जिसे सुन वह एकदम घबरा गई और बाहर की ओर भागी। कुछ देर बाद सुधा और प्रकाश ने भी निवेदिता के घर का रुख किया, लेकिन वहाँ जाकर पता चला कि निवेदिता के पापा अब नहीं रहे। घर आसपास के लोगों से भर चुका था, पता चला उन्हें सीरियस हार्ट अटैक हुआ था। ऑफिस के लोग उन्हें हॉस्पिटल ले गए जहाँ डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित किया था। निवेदिता के चाचा पीहू को हॉस्टल से लाने की तैयारी में थे। सुधा, प्रकाश, शेखर और मां ने उस दुःख की घड़ी में उसकी यथासंभव मदद की। तेरहवीं तक निवेदिता के घर उनका आना जाना लगातार बना रहा। निवेदिता अब पहले से और अधिक संजीदा रहने लगी थी।

कुछ दिन बीत गए एक दिन शेखर ने नजरें चुराकर अपनी मां से कहा ''मां अब निवेदिता घर नहीं आती?'' सुधा ने अपने बेटे की आंखों को पढ़ा और समझने में देर नहीं लगी कि पिछले कुछ दिनों से निवेदिता ने अपनी सौम्यता के कारण शेखर का दिल जीत लिया था।

सुधा का मन अपने ही बनाए ताने बाने में दिन भर उलझा रहा लेकिन शाम तक वह एक फैसला ले चुकी थी। अगले दिन सुबह जब सुधा ने उगता हुआ सूरज देखा तो उसे लगा सूरज उसे एक संदेश दे रहा है जिसे समझ सुधा मुस्कुरा दी। उसने उगते सूर्य को नमन किया और अंदर मां के पास पहुंच गई। मां अभी शिव स्तुति में मग्न थी। सुधा ने भी हाथ जोड़े और स्तुति खत्म होने का इंतजार करते हुए खुद भी वहीं बैठ गई मानो ईश्वर से किसी बात की सहमति ले रही हो।

पूजा खत्म हो चुकी थी ''मां मुझे आपसे कुछ जरूरी बात करनी है।'' मां तुरंत बोली बोलो बेटा। ''मां क्या आपको अपने शेखर के लिए निवेदिता पसंद है'' पास खड़े शेखर ने भी यह बात सुन ली थी वह अपनी मां के पास आया और उसे गले से लगा लिया। ''अरे सुधा तुमने तो मेरे मुंह की बात छीन ली मुझे तो निवेदिता बहुत पसंद है।''

प्रकाश की भी रजामंदी की मोहर लगवाकर सुधा ने अपना चेहरा आईने में देखा, बाल ठीक किए, मोबाइल उठाया और निवेदिता के घर चल दी।

आज सूरत में बहुत तपिश थी। सुनहरा सूरज मानो आज सुधा से बातें कर रहा था।

सुधा ने निवेदिता के घर की डोरबेल बजाई, जल्द ही शून्य आंखों से ताकती निवेदिता उसके सामने थी। ''निवेदिता, यह क्या हाल बना रखा है तुमने? तुम अकेली नहीं हो हम सब तुम्हारे साथ हैं। आज मैं तुमसे तुम्हीं को मांगने आई हूँ! क्या तुम अपने अतीत की काली यादों को इस सुनहरे सूरज को अर्पित कर मेरे घर की रोशनी बनोगी? सुनकर निवेदिता की आंखे आसुओं से भर गई। सुधा ने उसे स्नेह और ममत्व से गले लगाकर उसका माथा चूम लिया। आज का सूरज निवेदिता के लिए एक नया सवेरा लेकर आया था। तभी दूर मंदिर से आती घंटियों की आवाज ने वातावरण को मधुर बना दिया हो मानो ईश्वर उस सुनहरे सूरज के माध्यम से निवेदिता को उसके सुखद भविष्य के लिए आशीर्वाद दे रहे हो।

बस यही थी सुधा और निवेदिता की कहानी।

❑❑❑❑